भजन

तेरे इस दर के सिवा, दर न कोई देखा है
तेरी चरचा न हो, बशर न कोई देखा है

1- तेरे इस दर पे जो आते हैं नसीबों वाले
तेरे दर्शन को जो पाते है नसीबों वाले
तेरे इस दर से सब मन की मुराद मिलती है
मुरझाये दिल की कली आके यहां खिलती है
कोई मायूस हो जाते हुए न देखा है

2-हजारों दर हैं मगर इस तरह का दर हीनहीं
बहुत भटकी हूँ मगर आके मिला चौन यहीं
मेहर महबूब की किसी किसी पे होती है
वो ख़ासलख़ास जो रूह अर्श की होती है
कोई मायूस हो जाते हुए न देखा है